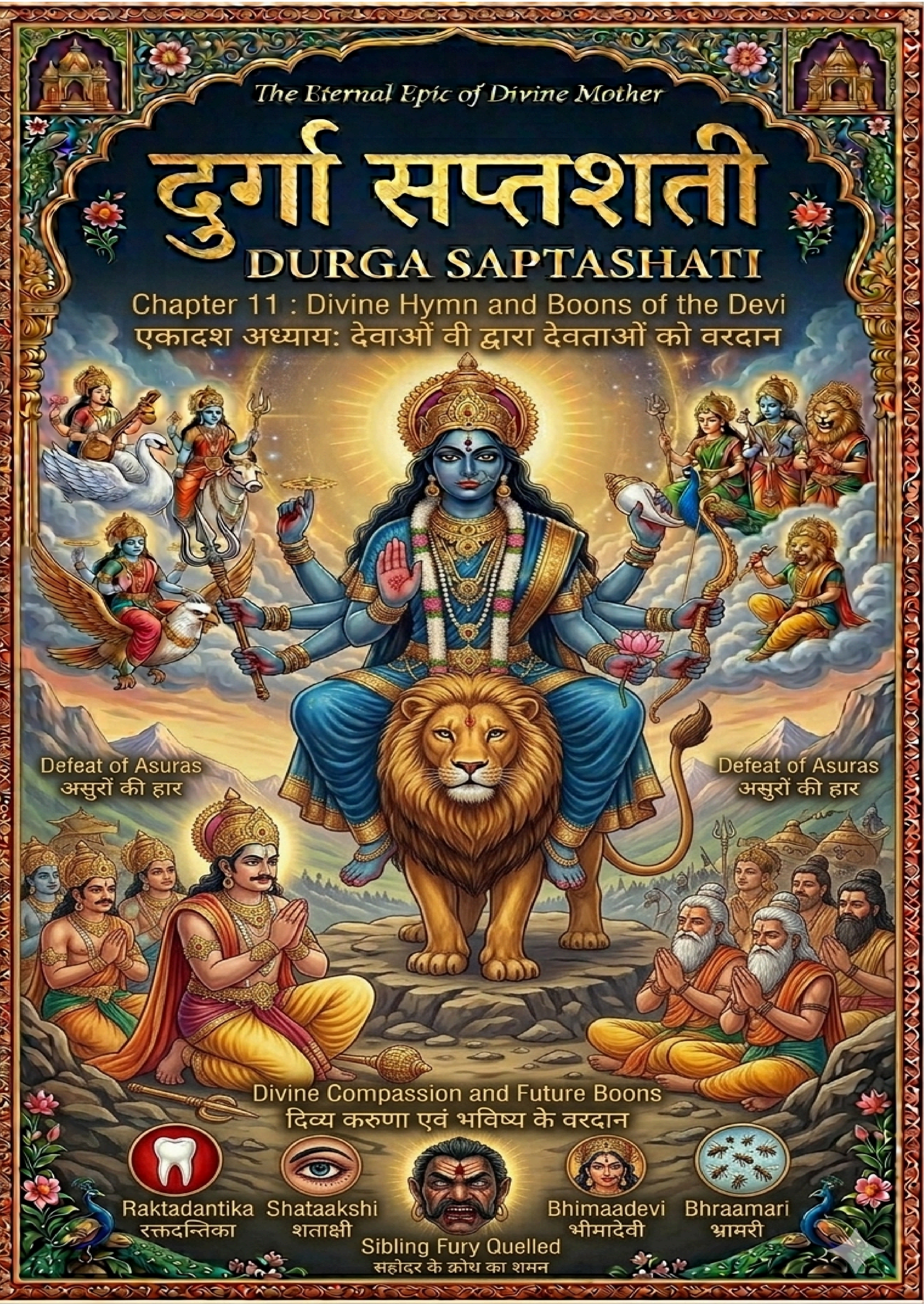
The Eternal Epic of Divine Mother
दुर्गा सप्तशती
DURGA SAPTASHATI
Chapter 11 : Divine Hymn and Boons of the Devi
एकादश अध्याय: देवाओं वी द्वारा देवताओं को वरदान
Defeat of Asuras
असुरों की हार
Defeat of Asuras
असुरों की हार
Divine Compassion and Future Boons
दिव्य करुणा एवं भविष्य के वरदान
Raktadantika
रक्तदन्तिका
Shataakshi
शताक्षी
Sibling Fury Quelled
सहोदर के क्रोध का शमन
Bhimaadevi
भीमादेवी
Bhraamari
भ्रामरी

# Durga Saptashati

|| 'एकादश अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

एकादश अध्याय: देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

महादैत्यपति शुम्भ के वध के बाद, इन्द्र आदि देवताओं ने अग्नि को आगे करके कात्यायनी देवी की स्तुति की। देवताओं ने देवी को शरणागत की पीड़ा हरने वाली, सम्पूर्ण जगत् की माता, विश्वेश्वरी, और चराचर जगत् की अधीश्वरी बताया। उन्होंने देवी को पृथ्वीरूप, जलरूप, वैष्णवी शक्ति, परा माया और मोक्षदात्री के रूप में पहचानते हुए उनकी स्तुति की।

देवताओं ने देवी को नारायणी रूप में बुद्धि, कला, काष्ठा, मङ्गलमयी शिवा, सृष्टि-पालन-संहार की शक्ति, दीनों की रक्षक, तथा ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नृसिंह, ऐन्द्री, शिवदूती, चामुण्डा आदि विभिन्न मातृका शक्तियों के रूप में नमन किया। उन्होंने देवी के सौम्य मुख, त्रिशूल, घण्टा और खड्ग से सबकी रक्षा करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि देवी प्रसन्न होने पर सब रोग नष्ट कर देती हैं और कुपित होने पर मनोवाञ्छित कामनाओं का नाश कर देती हैं, तथा उनकी शरण में आए लोग दूसरों को भी शरण देने वाले हो जाते हैं। देवताओं ने विश्वेश्वरि देवी से संसार के पाप नष्ट करने, शत्रुओं के भय से बचाने और उत्पातों को दूर करने की प्रार्थना की।

देवी ने प्रसन्न होकर देवताओं को वरदान देने की इच्छा प्रकट की। देवताओं ने वर माँगा कि देवी इसी प्रकार तीनों लोकों की बाधाओं को शांत करें और शत्रुओं का नाश करती रहें।

देवी ने वरदान देते हुए भविष्य के अपने अवतारों का वर्णन किया:

1. रक्तदन्तिका: वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नामक महादैत्यों के वध के लिए नन्दगोप की पत्नी यशोदा के गर्भ से विन्ध्याचल में अवतार लेना। फिर वैप्रचित्त दानवों का वध करते समय उनके दाँत अनार के फूल जैसे लाल हो जाएँगे, जिससे वे 'रक्तदन्तिका' कहलाएँगी।
2. शताक्षी और शाकम्भरी: पृथ्वी पर सौ वर्षों तक वर्षा न होने पर मुनियों के स्तवन करने पर अयोनिजा रूप में प्रकट होना और सौ आँखों से मुनियों को देखना, जिससे 'शताक्षी' नाम होगा। अपने शरीर से उत्पन्न शाकों द्वारा संसार का भरण-पोषण करने के कारण 'शाकम्भरी' कहलाना।
3. दुर्गादेवी: शाकम्भरी अवतार में दुर्गम नामक महादैत्य का वध करने पर 'दुर्गादेवी' नाम से प्रसिद्ध होना।
4. भीमादेवी: मुनियों की रक्षा के लिए हिमालय पर रहने वाले राक्षसों का भक्षण करने के लिए भीमरूप धारण करने पर 'भीमादेवी' नाम से विख्यात होना।
5. भ्रामरी: अरुण नामक दैत्य के उपद्रव के समय तीनों लोकों के हित के लिए असंख्य भ्रमरों का रूप धारण कर उसका वध करना, जिससे 'भ्रामरी' नाम से स्तुति की जाएगी।

देवी ने अंत में कहा कि जब-जब संसार में दानवी बाधा आएगी, तब-तब अवतार लेकर वह शत्रुओं का संहार करेंगी।

# Durga Saptashati
# ||    'एकादश अध्याय' ||

Chapter 11:

देवताओं द्वारा देवी की सतुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

॥ ध्यान ॥

मैं भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता (करती) हूँ। उनके श्रीअङ्गों की आभा प्रभातकाल के सूर्य के समान है और मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीन नेत्रों से युक्त हैं। उनके मुख पर मुसकान की छटा छायी रहती है और हाथों में वरद, अङ्कुश, पाश एवं अभय मुद्रा शोभा पाते हैं।

ऋषि कहते हैं - देवी के द्वारा वहाँ महादैत्यपति शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र आदि देवता अग्नि को आगे करके उन कात्यायनी देवी की स्तुति करने लगे। उस समय अभीष्ट की प्राप्ति होने से उनके मुखकमल दमक उठे थे और उनके प्रकाश से दिशाएँ भी जगमगा उठी थीं।

देवता बोले - शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवि! हम पर प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। देवि! तुम्हीं चराचर जगत् की अधीश्वरी हो।

तुम इस जगत् का एकमात्र आधार हो; क्योंकि पृथ्वीरूप में तुम्हारी ही स्थिति है। देवि! तुम्हारा पराक्रम अलङ्घनीय है। तुम्हीं जलरूप में स्थित होकर सम्पूर्ण जगत् को तृप्त करती हो।

तुम अनन्त बलसम्पन्न वैष्णवी शक्ति हो। इस विश्व की कारणभूता परा माया हो। देवि! तुमने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है। तुम्हीं प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

देवि! सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। जगदम्ब! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है।

तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे एवं परा वाणी हो।

जब तुम सर्वस्वरूपा देवी स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने वाली हो, तब इसी रूप में तुम्हारी स्तुति हो गयी। तुम्हारी स्तुति के लिये इससे अच्छी उक्तियाँ और क्या हो सकती हैं?

बुद्धिरूप से सब लोगों के हृदय में विराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है।

कला, काष्ठा आदि के रूप से क्रमशः परिणाम-(अवस्था परिवर्तन) की ओर ले जाने वाली तथा विश्व का उपसंहार करने में समर्थ नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

नारायणि! तुम सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करने वाली मङ्गलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है।

तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

नारायणि! तुम ब्रह्माणी का रूप धारण करके हंसों से जुते हुए विमान पर बैठती तथा कुश-मिश्रित जल छिड़कती रहती हो। तुम्हें नमस्कार है।

माहेश्वरी रूप से त्रिशूल, चन्द्रमा एवं सर्प को धारण करने वाली तथा महान् वृषभ की पीठ पर बैठने वाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

मोरों और मुर्गे से घिरी रहने वाली तथा महाशक्ति धारण करने वाली कौमारी रूपधारिणी निष्पापे नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्गधनुषरूप उत्तम आयुधों को धारण करने वाली वैष्णवी शक्तिरूपा नारायणि! तुम प्रसन्न होओ। तुम्हें नमस्कार है।

हाथ में भयानक महाचक्र लिये और दाढ़ों पर धरती को उठाये वाराही रूपधारिणी कल्याणमयी नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

भयंकर नृसिंह रूप से दैत्यों के वध के लिये उद्योग करने वाली तथा त्रिभुवन की रक्षा में संलग्न रहने वाली नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

मस्तक पर किरीट और हाथ में महावज्र धारण करने वाली, सहस्र नेत्रों के कारण उद्दीप्त दिखायी देने वाली और वृत्रासुर के प्राणों का अपहरण करने वाली इन्द्रशक्तिरूपा नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है।

शिवदूती रूप से दैत्यों की महती सेना का संहार करने वाली, भयंकर रूप धारण तथा विकट गर्जना करने वाली नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

दाढ़ों के कारण विकराल मुख वाली मुण्डमाला से विभूषित मुण्डमर्दिनी चामुण्डारूपा नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि, स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि तथा महाअविद्यारूपा नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

मेधा, सरस्वती, वरा (श्रेष्ठा), भूति (ऐश्वर्यरूपा), बाभ्रवी (भूरे रंग की अथवा पार्वती), तामसी (महाकाली), नियता (संयमपरायणा) तथा ईशा-(सबकी अधीश्वरी) रूपिणी नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है।

कात्यायनि! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है।

भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होने वाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करने वाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये। तुम्हें नमस्कार है।

देवि! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हम लोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मों से रक्षा करती है।

चण्डिके! तुम्हारे हाथों में सुशोभित खड्ग, जो असुरों के रक्त और चर्बी से चर्चित है, हमारा मङ्गल करे। हम तुम्हें नमस्कार करते हैं।

देवि! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाञ्छित

सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

देवि! अम्बिके! तुमने अपने स्वरूप को अनेक भागों में विभक्त करके नाना प्रकार के रूपों से जो इस समय इन धर्मद्रोही महादैत्यों का संहार किया है, वह सब दूसरी कौन कर सकती थी?

विद्याओं में, ज्ञान को प्रकाशित करने वाले शास्त्रों में तथा आदिवाक्यों-(वेदों) में तुम्हारे सिवा और किसका वर्णन है? तथा तुमको छोड़कर दूसरी कौन ऐसी शक्ति है, जो इस विश्व को अज्ञानमय घोर अन्धकार से परिपूर्ण ममतारूपी गढ़े में निरन्तर भटका रही हो?

जहाँ राक्षस, जहाँ भयंकर विषवाले सर्प, जहाँ शत्रु, जहाँ लुटेरों की सेना और जहाँ दावानल हो, वहाँ तथा समुद्र के बीच में भी साथ रहकर तुम विश्व की रक्षा करती हो।

विश्वेश्वरि! तुम विश्व का पालन करती हो। विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो। तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो। जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

देवि! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत् का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली महामारी आदि बड़े-बड़े उपद्रवों को शीघ्र दूर करो।

विश्व की पीड़ा दूर करने वाली देवि! हम तुम्हारे चरणों पर पड़े हुए हैं, हम पर प्रसन्न होओ। त्रिलोकनिवासियों की पूजनीया परमेश्वरि! सब लोगों को वरदान दो।

देवी बोलीं - देवताओ! मैं वर देने को तैयार हूँ। तुम्हारे मन में जिसकी इच्छा हो, वह वर माँग लो। संसार के लिये उस उपकारक वर को मैं अवश्य दूँगी।

देवता बोले - सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

देवी बोलीं - देवताओ! वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नामके दो अन्य महादैत्य उत्पन्न होंगे।

तब मैं नन्दगोप के घर में उनकी पत्नी यशोदा के गर्भ से अवतीर्ण हो विन्ध्याचल में जाकर रहूँगी और उक्त दोनों असुरों का नाश करूँगी।

फिर अत्यन्त भयंकर रूप से पृथ्वी पर अवतार ले मैं वैप्रचित्त नामवाले दानवों का वध करूँगी।

उन भयंकर महादैत्यों को भक्षण करते समय मेरे दाँत अनार के फूल की भाँति लाल हो जायँगे।

तब स्वर्ग में देवता और मर्त्यलोक में मनुष्य सदा मेरी स्तुति करते हुए मुझे 'रक्तदन्तिका' कहेंगे।

फिर जब पृथ्वी पर सौ वर्षों के लिये वर्षा रुक जायगी और पानी का अभाव हो जायगा, उस समय मुनियों के स्तवन करने पर मैं पृथ्वी पर अयोनिजारूप में प्रकट होऊँगी।

और सौ नेत्रों से मुनियों को देखूँगी। अतः मनुष्य 'शताक्षी' इस नाम से मेरा कीर्तन करेंगे।

देवताओ! उस समय मैं अपने शरीर से उत्पन्न हुए शाकों द्वारा समस्त संसार का भरण-पोषण करूँगी। जब तक वर्षा नहीं होगी, तब तक वे शाक ही सबके प्राणों की रक्षा करेंगे।

ऐसा करने के कारण पृथ्वी पर 'शाकम्भरी' के नाम से मेरी ख्याति होगी। उसी अवतार में मैं दुर्गम नामक महादैत्य का वध भी करूँगी।

इससे मेरा नाम 'दुर्गादेवी' के रूप से प्रसिद्ध होगा। फिर मैं जब भीमरूप धारण करके मुनियों की रक्षा के लिये हिमालय पर रहने वाले राक्षसों का भक्षण करूँगी, उस समय सब मुनि भक्ति से नतमस्तक होकर मेरी स्तुति करेंगे।

तब मेरा नाम 'भीमादेवी' के रूप में विख्यात होगा। जब अरुण नामक दैत्य तीनों लोकों में भारी उपद्रव मचायेगा।

तब मैं तीनों लोकों का हित करने के लिये छः पैरों वाले असंख्य भ्रमरों का रूप धारण करके उस महादैत्य का वध करूँगी।

उस समय सब लोग 'भ्रामरी' के नाम से चारों ओर मेरी स्तुति करेंगे। इस प्रकार जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी, तब-तब अवतार लेकर मैं शत्रुओं का संहार करूँगी।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'देवीस्तुति' नामक ग्यारहवाँ अध्याय पूरा हुआ।

# Durga Saptashati

## || Chapter Eleven ||

Chapter 11:

The Deities' Hymn of Praise to the Devi and the Devi's Granting of Boons to the Deities

### || Dhyana (Meditation) ||

I meditate upon Devi Bhuvaneshwari (the Goddess of the Universe). The radiance of her sacred limbs is like the morning sun, and a crescent moon adorns her head as a crown. She has raised breasts and three eyes. A beautiful smile plays upon her face, and her hands are graced with the gestures of granting boons (Varada), the elephant goad (Ankusha), the noose (Pasha), and the gesture of fearlessness (Abhaya Mudra).

**The Rishi said:** When the great demon-king Shumbha was slain there by the Devi, the deities, with Agni (Fire God) at the forefront, began to praise that Devi Katyayani. At that time, their lotus-like faces shone brightly due to the attainment of their desired goal, and their radiance illuminated the directions.

**The Deities spoke:** O Devi, who removes the distress of those who seek refuge! Be pleased with us. O Mother of the entire world! Be gracious. O Vishweshwari (Ruler of the Universe)! Protect the universe. O Devi! You are the sovereign of this movable and immovable world.

You are the sole support of this world, as you abide in the form of the Earth. O Devi! Your valor is unconquerable. You abide in the form of water and satisfy the entire world.

You are the Vaishnavi Shakti (Power of Vishnu), possessing infinite strength. You are the Para Maya (Supreme Illusion), the cause of this universe. O Devi! You have deluded this entire world. When pleased, you grant the attainment of liberation (Moksha) on this Earth.

O Devi! All forms of knowledge are but your various aspects. All the women in the world are your very forms. O Jagadamba (Mother of the Universe)! You alone have pervaded this entire universe. What praise can suffice for you? You are beyond the reach of objects worthy of praise and are the supreme speech (Para Vani).

When you, the all-pervasive Devi, are the bestower of heaven and liberation, then your praise is already accomplished in this very form. What other better words could there be for your eulogy?

Salutations to you, O Narayani, who resides in the hearts of all people in the form of intelligence (Buddhi) and who grants heaven and liberation.

Salutations to you, O Narayani, who gradually leads the universe towards transformation (change of state) in the forms of Kala, Kashtha (measures of time) and who is capable of withdrawing (dissolving) the universe.

O Narayani! You are all-auspicious, the embodiment of auspiciousness (Mangalamayi). You are the benevolent Shiva (Kalyanadayini). You are the one who accomplishes all the goals of human life (Purusharthas), who is affectionate to those who seek refuge (Sharanagatavatsala), who has three eyes, and who is Gauri. Salutations to you.

You are the power behind creation, preservation, and destruction, the eternal Devi, the support of the Gunas (Sattva, Rajas, Tamas), and the embodiment of all Gunas. O Narayani! Salutations to you.

Salutations to you, O Narayani Devi, who is engaged in the protection of the poor and the distressed who come for refuge, and

who removes the suffering of all.

O Narayani! You assume the form of Brahmani, seated on a chariot drawn by swans, and you sprinkle water mixed with Kusha grass. Salutations to you.

Salutations to you, O Narayani Devi, who in the form of Maheshwari (Power of Shiva) holds the trident, the moon, and the serpent, and who is seated on the back of a great bull.

O sinless Narayani! Salutations to you, who assumes the form of Kaumari (Power of Kumara/Kartikeya), surrounded by peacocks and roosters, and who holds the great spear (Mahashakti).

O Narayani, who is the Vaishnavi Shakti, holding the excellent weapons of the conch, discus, mace, and the Sharanga bow! Be pleased. Salutations to you.

Salutations to you, O benevolent Narayani, who assumes the form of Varahi, holding the terrifying great discus in her hand and lifting the Earth on her tusks.

Salutations to you, O Narayani, who strives for the destruction of the demons in the terrifying form of Narasimha, and who is engaged in the protection of the three worlds.

Salutations to you, O Narayani Devi, who is the Indra Shakti (Power of Indra), wearing a crown on her head and holding the great thunderbolt (Mahavajra) in her hand, who appears brilliant due to her thousand eyes, and who stole the life of the demon Vritrasura.

Salutations to you, O Narayani, who in the form of Shivaduti (Messenger of Shiva) slays the huge army of demons, assumes a terrifying form, and makes dreadful roars.

Salutations to you, O Narayani, who is Chamuṇḍa, the slayer of Muṇḍa, whose face is terrible due to her tusks, and who is adorned with a garland of skulls.

Salutations to you, O Narayani, who is Lakshmi, Lajjā (Modesty),

Mahāvidyā (Great Knowledge), Shraddhā (Faith), Pushti (Nourishment), Svadhā (Oblation to ancestors), Dhruvā (Constant), Mahārātri (Great Night), and Mahāvidyā (Great Ignorance).

Salutations to you, O Narayani, who is Medhā (Intellect), Sarasvatī (Goddess of Speech), Varā (Excellent), Bhūti (Prosperity), Bābhravī (Brown-colored or Pārvatī), Tāmasī (Mahākālī), Niyatā (Restrained), and Īshā (Ruler of all).

O Durga Devi, who is the form of everything (Sarvaswarupa), the ruler of everything (Sarveshwari), and endowed with all types of divine powers (Divyarupa)! Protect us from all fears; salutations to you.

O Katyayani! May your gentle face, adorned with three eyes, protect us from all kinds of fears. Salutations to you.

O Bhadrakali! May your trident, which appears terrifying due to its flames, is extremely dreadful, and slays all the Asuras, protect us from fear. Salutations to you.

O Devi! May your bell, whose sound pervades the entire world and destroys the brilliance of the demons, protect us from sins, just as a mother protects her children from evil deeds.

O Chandika! May the sword shining in your hands, which is smeared with the blood and fat of the Asuras, bring us welfare. We salute you.

O Devi! When you are pleased, you destroy all diseases, and when you are angered, you destroy all desired wishes. No calamity ever befalls those who have taken refuge in you. Those who have sought your shelter become the givers of shelter to others.

O Devi! O Ambike! What other power could have done all this that you have done at this time by dividing your own form into many parts and destroying these great demons, the enemies of Dharma, with various forms?

In the Vidyas (lores), in the scriptures that illuminate knowledge, and in the ancient Vedic statements, whose description is there other than yours? And who else is there, other than you, who constantly makes this world wander in the pit of attachment (Mamatā), which is filled with the dreadful darkness of ignorance?

You protect the world by remaining present where there are Rakshasas (demons), where there are highly poisonous serpents, where there are enemies, where there are armies of robbers, where there is a forest fire, and even in the middle of the ocean.

O Vishweshwari (Ruler of the Universe)! You nourish the world. You are the form of the universe, and therefore you support the entire world. You are revered even by Lord Vishwanath (Shiva). Those who bow their heads before you with devotion become the refuge for the entire world.

O Devi! Be pleased. Just as you have quickly protected us by slaying the Asuras at this time, similarly, always protect us from the fear of enemies. Destroy the sins of the entire world, and quickly remove the great calamities like epidemics, which result from evil deeds and sins.

O Devi, who removes the suffering of the world! We fall at your feet, be gracious to us. O Parameshwari (Supreme Goddess), who is worshiped by the residents of the three worlds! Grant boons to all people.

The Devi said: O Deities! I am ready to grant a boon. Ask for whatever is in your heart's desire. I shall certainly grant that beneficial boon for the world.

The Deities said: O Sarveshwari (Ruler of All)! In this manner, calm all the obstacles in the three worlds and continue to destroy our enemies.

The Devi said: O Deities! In the twenty-eighth Yuga of the Vaivasvata Manvantara, two other great demons named Shumbha

and Nishumbha will be born.

Then, I shall descend in the home of Nanda Gopa, from the womb of his wife Yashoda, and I shall dwell in the Vindhya mountains and destroy the two said Asuras.

Then, taking a very dreadful form, I shall incarnate on Earth and slay the Danavas named Vaiprachitta.

While devouring those dreadful Mahā-daityas (great demons), my teeth will become red like the pomegranate flower.

Then, the Deities in heaven and humans in the mortal world, always praising me, will call me 'Raktadantikā' (She with blood-red teeth).

Then, when the rain will cease for a hundred years on Earth, and there will be a lack of water, I shall appear on Earth in a non-uterine (ayonija) form upon the eulogy of the Sages (Munis).

And I shall look upon the Munis with a hundred eyes. Hence, humans will glorify me by the name 'Shataakshī' (She with a hundred eyes).

O Deities! At that time, I shall nourish the entire world with vegetables grown from my own body. Until the rain returns, those vegetables alone will protect the lives of all.

Because of this deed, I shall be famous on Earth by the name 'Shākambharī'. In that very incarnation, I shall also slay the great demon named Durgama.

Due to this, my name 'Durgā Devī' will become famous. Then, when I assume a terrible form and devour the Rākshasas dwelling in the Himalayas for the protection of the Sages, at that time, all the Sages, with devotion, will bow their heads and praise me.

Then my name 'Bhīmādevī' (The Terrible Goddess) will become renowned. When the demon named Aruṇa will cause great trouble in the three worlds.

Then, for the welfare of the three worlds, I shall assume the form of innumerable bees with six legs and slay that great demon.

At that time, all people will praise me everywhere by the name 'Bhrāmarī' (The Goddess of Bees). Thus, whenever an obstacle caused by the Dānavas (demons) arises in the world, I shall incarnate and destroy the enemies.

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the story of the Savarnika Manvantara, the eleventh chapter named 'Devīstuti' (Hymn of Praise to the Devi) in the Devi Mahatmya is completed.

# Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

### Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

### Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool